42

अन्तिम पलों की तैयारियां

(16:21-28)

चेलों को अभी तक यीशु की यह बात समझ नहीं आई थी, जो उस ने कहा था कि वह मसीहा और परमेश्वर का पुत्र है। अब वह उन्हें और सिखाने और यह बताने लगा कि उस का मरना आवश्यक है।

निकट आ रहा क्रूस और सिर पर मण्डराती अपनी मृत्यु की यीशु की पहली घोषणा (16:21-23)

[21]उस समय से यीशु अपने चेलों को बताने लगा अवश्य है कि मैं यरूशलेम को जाऊं और पुरनियों, और प्रधान याजकों और शास्त्रियों के हाथ से बहुत दुःख उठाऊं और मार डाला जाऊं; और तीसरे दिन जी उठूं। [22]इस पर पतरस उसे अलग ले जाकर झिड़कने लगा, ''हे प्रभु, परमेश्वर न करे! तेरे साथ ऐसा कभी न होगा।'' [23]उस ने मुड़कर पतरस से कहा, ''हे शैतान, मेरे सामने से दूर हो। तू मेरे लिए ठोकर का कारण है: क्योंकि तू परमेश्वर की बातें नहीं, पर मनुष्यों की बातों पर मन लगाता है।''

आयत 21. उस समय से (देखें 4:17) यीशु की सेवकाई के एक नये चरण का संकेत है। गलील में उस का काम खत्म होने वाला था और वह अपना ध्यान यरूशलेम की ओर मोड़ रहा था (देखें 19:1)। गुलगुता की परछाईं अब उसके ऊपर पड़ने लगी थी। उत्पत्ति 3:15 के बाद से पवित्र शास्त्र में किसी एक नाटकीय घटना की ओर ध्यान इंगित किया गया है। उस ने यरूशलेम की ओर मुंह कर लिया है और उस ने वापस नहीं मुड़ना था। यीशु को मालूम था कि जिन लोगों पर वह संसार में उद्धार का अपना संदेश ले जाने के लिए निर्भर था, वे अभी आत्मिक समझ में कच्चे थे। उसे उन्हें अभी बहुत कुछ समझाना था और इस कार्य को इस थोड़े से समय में ही पूरा किया जाना था।

यीशु अपने चेलों को बताने लगा कि अवश्य है कि मैं यरूशलेम को जाऊं और ... बहुत दुख उठाऊं। 16:1 में फरीसियों और सदूकियों ने यीशु को एक चिह्न ''दिखाने'' (*epideiknumi*) को कहा था, परन्तु उस ने नहीं दिखाया। यहां यीशु अपने चेलों को वह ''दिखाने'' (*deiknumi*) लगा, जो भविष्य में हाने वाला था। मसीह के साथ उनके सम्बन्ध के कारण उन्हें इस प्रकाशन को पाने का सौभाग्य मिला (13:11)।[1] ''अवश्य'' (*dei*) क्रिया शब्द ईश्वरीय आवश्यकता का संकेत देता है; उसके लिए दुख उठाना परमेश्वर की इच्छा थी (26:39, 42; प्रेरितों 2:23)।

प्रभु के दुख को **पुरनियों और प्रधान याजकों और शास्त्रियों** के द्वारा और बढ़ाया जाना

था। ''पुरनिए'' अपनी समझ के लिए जाने जाते थे। ''प्रधान याजक'' शासन करने वाले कुलीन लोग थे, जो आमतौर पर सदूकियों के साथ मिल जाते थे। ''शास्त्री'' या ''व्यवस्था के सिखाने वाले'' (NIV) पढ़े-लिखे रब्बी होते थे, यानी वे मुख्यतया फरीसी ही होते थे। यह तिहरा विवरण यरूशलेम की यहूदी सभा, महासभा या सन्हेद्रिन का संकेत है। वे लोग जिन्हें यीशु का आदर और आराधना करने वालों की कतार में सबसे पहले होना चाहिए था, वही उसे दुख देने वाले और उस की मृत्यु की मांग करने वाले लोग थे![2]

मसीह ने विशेष रूप से भविष्यवाणी की कि उस को **मार डाला** जाना था। उस ने ऐसी मृत्यु का संकेत दिया था (9:15; 12:39, 40; यूहन्ना 2:19; 3:14; 6:51), परन्तु इसके बारे में यह पहली बात थी (देखें 17:22, 23; 20:17-19; 26:2)। मरकुस में इसके समानांतर आयतों में कहा गया है कि ''उस ने यह बात उनसे साफ-साफ कह दी'' (मरकुस 8:32)। यीशु ने इस भविष्यवाणी में अपनी मृत्यु के ढंग को चेलों पर बिल्कुल स्पष्ट प्रकट नहीं किया, चाहे 16:24 में इसका संकेत है। बाद की एक भविष्यवाणी में यीशु ने स्पष्ट कर दिया कि उस की मृत्यु क्रूस पर चढ़ाए जाने से होनी थी (20:17-19)। शायद उन्हें पुराने नियम की भविष्यवाणी से इस सच्चाई का पहले से ही पता होना चाहिए था (भजन संहिता 22:16-18; यशायाह 53:1-12)।

यीशु ने यह भी समझाया कि उस ने **तीसरे दिन जी** उठना था। परमेश्वर ने ''[उसके] प्राणों को अधोलोक में न छोड़ना था और न अपने पवित्र जन को सड़ने ही'' देना था (प्रेरितों 2:27)। ''तीसरे दिन'' जो ''तीन दिन बाद'' की इब्रानी अभिव्यक्ति के समान ही है, मसीह के जी उठने की पवित्र शास्त्र की गवाही से मेल खाता है।[3] अपने दुख भोगने के यीशु पहले से ज्ञान ने, जो उस ने कई अवसरों पर अपने चेलों पर प्रकट किया, उसके जी उठने के बाद उनके विश्वास को मज़बूत किया (लूका 24:44-49; यूहन्ना 14:29; 16:1, 4, 33)।

आयत 22. मसीह के रूप में पतरस द्वारा यीशु का अंगीकार किए जाने को ध्यान में रखते हुए (16:16), यीशु की सनिकट मृत्यु चौंकाने वाली थी। **पतरस उसे अलग ले जाकर झिड़कने लगा**। यह स्पष्ट है कि पतरस के काम बहुत ही असाधारण होते थे। किसी छात्र के लिए अपने गुरु की गलती सुधारना परम्परा के विरुद्ध है, और फिर उसे ''झिड़कना'' तो इससे भी बड़ी बात थी![4] पतरस ने ज़िद की, **''हे प्रभु, परमेश्वर न करे! तेरे साथ ऐसा कभी न होगा।''** यह विचार कि मसीहा ने दुख उठाना था, पहली सदी की यहूदियों की उम्मीदों के पूरी तरह से उलट था (1 कुरिन्थियों 1:23)। उन्हें उम्मीद थी कि मसीहा इस्राएल को उसके शत्रुओं से छुड़ाएगा और इस्राएल के भीतर दुष्ट लोगों का न्याय करेगा। उस ने अपने आपको मृत्यु नहीं देनी थी![5] तौभी पतरस के लिए यह सोचना कि वह प्रभु की मृत्यु को रोक सकता है, मूर्खता की बात थी।

आयत 23. अपनी सबसे तीखी डांटों में से एक में जो दर्ज की गई हैं, यीशु ने **पतरस से कहा, ''हे शैतान, मेरे सामने से दूर हो।''** जैसा उस ने बाद में किया, मसीह का तीन बार इनकार करने पर, पतरस ने शैतान को अपने मन में प्रवेश करने और ''[उसे] गेहूं के साथ फटकने'' की अनुमति दी (लूका 22:31)। शैतान पतरस का इस्तेमाल यीशु को ''क्रूस को सहे बिना मुकुट को पाने के लिए''[6] प्रलोभन में डालने के लिए कर रहा था (4:8-10 पर टिप्पणियां देखें)। जब कोई व्यक्ति परमेश्वर की इच्छा के विरोध में खड़ा होता है तो वह अपने आपको

शैतान की गोद में पाता है और वह अपने काम में अपने आपको और भी व्यस्त हुआ पाता है।[7]

17 और 23 आयतों के बीच एक स्पष्ट बड़ा अन्तर है। आयत 17 में, यीशु ने पतरस को यह कहते हुए कि उस पर परमेश्वर की ओर से प्रकट किया गया था, अपने अंगीकार के लिए उसे आशीष दी। आयत 23 में ऐसा लगता है कि मसीह को डांटने की पतरस को प्रेरणा शैतान की ओर से दी गई थी।

''हे शैतान, मेरे सामने से दूर हो'' 4:10 में ''हे शैतान दूर हो जा'' के जैसा ही है। परन्तु जंगल की परीक्षाओं में तो यीशु शैतान को उसके सामने से चले जाने को कह रहा था, पर यहां हो सकता है वह पतरस को चेले के रूप में अपनी सही भूमिका में वापस आने या क्रूस तक उसके पीछे चलने के लिए कह रहा हो।[8]

अपने विरोध के द्वारा पतरस यीशु के लिए **ठोकर का कारण** था। पतरस, अर्थात ''पत्थर'' ठोकर लगने का पत्थर बन चुका था। यदि पतरस यीशु के पीछे चलता, तो उस ने क्रूस तक उसके जाने के समय यीशु के लिए कोई रुकावट नहीं बनना था।

यीशु ने पतरस से कहा, **''तू परमेश्वर की बातें नहीं, पर मनुष्यों की बातों पर मन लगाता है।''** प्रेरित आत्मिक रूप से नहीं सोच रहा था, वह तो शारीरिक रूप से सोच रहा था। उस भूमिका के अर्थ के बारे में उस की समझ यीशु की समझ से अलग थी। आयत 17 में ''मांस और लहू'' (नाशवान मनुष्य) और ''पिता जो स्वर्ग में है'' में बहुत अन्तर दिखाया गया है। यहां पर ''परमेश्वर की बातों'' और ''मनुष्य की बातों'' में एक और अन्तर दिखाया गया है।

शिष्यता के दाम की यीशु की घोषणा (16:24-27)

[24]तब यीशु ने अपने चेलों से कहा, ''यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप का इनकार करे और अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले। [25]क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे, वह उसे खोएगा, और जो कोई मेरे लिए अपना प्राण खोएगा, वह उसे पाएगा। [26]यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, और अपने प्राण की हानि उठाए तो उसे क्या लाभ होगा? या मनुष्य अपने प्राण के बदले क्या देगा? [27]मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों के साथ अपने पिता की महिमा में आएगा, और उस समय वह हर एक को उस के कामों के अनुसार प्रतिफल देगा।

आयत 24. उन बलिदानों के लिए उन्हें तैयार करने के लिए जो उन्हें देने थे, **यीशु** ने अपने प्रेरितों को शिष्यता यानी चेला होने का असली अर्थ बताया। मसीह का सच्चा अनुयायी बनने के लिए **अपने आपका इनकार** करना आवश्यक है। ''इनकार'' के लिए यूनानी शब्द (*aparneomai*) का अर्थ ''पूर्ण त्याग'' या ''अपने आपको किसी दूसरे व्यक्ति से पूरी तरह से अलग करना'' हो सकता है। बाद में यीशु ने पतरस द्वारा उसके इनकारों का संकेत देने के लिए इसी शब्द का इस्तेमाल किया (26:34, 35, 75)। *Aparneomai* की एक और परिभाषा ''पूरी तरह से नि:स्वार्थ ढंग से काम'' करना है। यह शब्द इस तथ्य को दर्शाता है कि जीवन हमें दो पसन्दें देता है, जिसमें या तो हमें अपने आपका इनकार करना है या मसीह का इनकार करना है, जो अपना इनकार करने के लिए कहता है।[9]

इसके अलावा असली चेला बनने के लिए **अपना क्रूस उठा** (देखें 10:38) कर यीशु के पीछे चलना आवश्यक है। लूका ने ''प्रतिदिन'' शब्द जोड़ दिया है (लूका 9:23)। यीशु के समय में क्रूस गले में या जैकेट पर पहनने वाला शृंगार नहीं, बल्कि प्रताड़ना का एक तरीका होता था। क्रूस पर चढ़ाया जाना प्राचीन जगत के मृत्युदण्ड के सबसे दर्दनाक, अपमानजनक और भयंकर ढंगों में से एक होता था। रोमियों ने अपनी प्रजा के विद्रोह को रोकने के रूप में इसका इस्तेमाल बड़े प्रभावशाली ढंग से किया था। परम्परागत ढंग में दोषी ठहराए गए अपराधी क्रूस के भारी शहतीर (*patibulum*) को क्रूस पर चढ़ाए जाने के स्थान (यूहन्ना 19:17)[10] तक ले जाते थे।[10] वे न केवल क्रूस के शहतीर का बोझ उठाते, बल्कि रास्ते में तमाशबीनों की ठट्ठे और अपमानों को पी जाते थे।

यीशु **अपने चेलों** को बता रहा था कि उस की खातिर उन्हें इन दुखों और अपमान को यहां तक कि मृत्यु को भी सहना आवश्यक था। **मेरे पीछे हो ले** यीशु की ओर ध्यान दिलाता है जो क्रूस पर मरने के लिए यरूशलेम की ओर जा रहा था। शायद यह अपने पीछे होने की पतरस को दी गई यीशु की आज्ञा से भी मेल खाता है।

स्पष्टतया पतरस को लगा था कि उनमें से किसी को भी दुख नहीं उठाना था। वह बिल्कुल गलत था! बाद में यीशु ने पतरस को बताया कि वह किस प्रकार की मृत्यु मरेगा–क्रूस पर चढ़ाए जाने से (यूहन्ना 21:18, 19)। परम्परा यही बताती है कि पतरस ने उलटा क्रूस पर लटकाए जाने के लिए कहा क्योंकि उसे नहीं लगा कि वह यीशु की तरह ही क्रूस पर चढ़ाए जाने के योग्य है।[11] इन सभी को अन्त में दुख उठाना था।[12] जब याकूब और यूहन्ना की माता यह कहते हुए यीशु के पास आई थीं कि उसके बेटों को राज्य में उसके दाहिने और उसके बाएं ओर बिठाया जाए, तो यीशु का उत्तर था कि वे उसी कटोरे में से पीएंगे, जिसमें उस ने पीया था, जिसका अर्थ था कि दुखों और मृत्यु का कटोरा (20:23)। परम्परा के अनुसार, सभी वफ़ादार प्रेरितों में से केवल एक शहीद की मृत्यु नहीं मरा। यह अपवाद यूहन्ना था, जिसने प्रताड़ना और निर्वासन को सहा (प्रकाशितवाक्य 1:9)।

आयत 25. क्रूस उठाने का अर्थ मसीह की खातिर अपनी जान देना है। यीशु ने बताया, **''क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे, वह उसे खोएगा, और जो कोई मेरे लिए अपना प्राण खोएगा, वह उसे पाएगा''** (देखें 10:39)।[13] अपने प्राण को बचाने का अर्थ केवल अपने लिए जीना है। ऐसी जीवन शैली का अन्त अनन्त जीवन की हानि के साथ होता है और स्पष्ट कहें तो जैसा रॉबर्ट एच. गुंडरी ने कहा है, ''सताव के भय के द्वारा चेला बनने से इनकार करके शारीरिक जीवन को बचाने का अर्थ अनन्त जीवन की हानि की ओर जाना है।''[14] इस आयत में ''प्राण'' शब्द अस्थाई जीवन या अनन्त जीवन के लिए हो सकता है।[15] यीशु पूछ रहा था, ''तुम किसे चुनोगे?''

आयत 26. फिर प्रभु ने पूछा, **''यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा? या मनुष्य अपने प्राण के बदले क्या देगा?''** यहां इस आयत वाला ''प्राण'' और (16:25) वाला ''प्राण'' एक ही यूनानी शब्द (*psuchē*) शब्द से निकले हैं। न तो यूनानी और न सामी भाषाओं में ''प्राण'' के लिए (soul) और ''जान'' (life) में स्पष्ट अन्तर है, क्योंकि प्रत्येक भाषा में एक शब्द दो अवधारणाओं को दर्शाता है।[16]

यहां ''प्राण'' शब्द आम अनुवाद है।

यदि किसी के लिए पूरे संसार की दौलत पाने और रखने की बात सम्भव भी होती तौ भी एक प्राण को खोने के बराबर होती? हर प्रकार की शारीरिक दौलत अस्थाई है (6:19-21)। संसार को पाना और अपनी आत्मा को खो देना, सबसे मूर्खता भरा निवेश होगा, जो व्यक्ति कर सकता है (19:16-22; लूका 12:16-21; 16:19-31)। भविष्य बनाए और खोए जा सकते हैं, परन्तु हर व्यक्ति का केवल एक प्राण है। स्वर्ग में धन जमा करने का अर्थ इसे सदा के लिए पाना है। एक बार खो जाने के बाद कोई भी अपने प्राण को ''अदला-बदली'' (*antallagma*) या ''वापस खरीद'' नहीं सकता।

आयत 27. यीशु ने यह समझाना जारी रखा कि अपना इनकार करना, अपना क्रूस उठाना और उसके पीछे चलना क्यों चाहिए: **''मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों के साथ अपने पिता की महिमा में आएगा, और उस समय वह हर एक को उस के कामों के अनुसार प्रतिफल देगा।''** अपने कारण देते हुए उस ने तीसरी बार ''क्योंकि'' कहा। यहां वह कहता है कि आने वाले न्याय को ध्यान में रखते हुए अपना इनकार करने वाला जीवन जीना चाहिए। प्रभु ''महिमा'' ''शाही शान'' में आ रहा है और उसके साथ ''उसके स्वर्गदूत'' होंगे (25:31; 1 थिस्सलुनीकियों 4:16; 2 थिस्सलुनीकियों 1:7)। उस का द्वितीय आगमन उसके पहले आगमन की तरह नहीं होगा। उसके वापस आने पर, हर किसी को इसका पता होगा (प्रकाशितवाक्य 1:7)। वह मनुष्यजाति का न्याय करने आ रहा है। हर व्यक्ति को उस का सही-सही प्रतिफल दिया जाएगा। यह न्याय मनुष्य के ''कामों'' पर आधारित होगा (रोमियों 2:5-7; 2 कुरिन्थियों 5:10; 11:15; 1 पतरस 1:17; प्रकाशितवाक्य 2:23; 20:12, 13; 22:12)। यह उस की बातों (12:36, 37) और उन गुप्त विचारों के आधार पर भी होगा, जो छिपे हुए थे (सभोपदेशक 12:14)। सारा न्याय मसीह के वचनों के आधार पर होगा (यूहन्ना 12:48)।

यीशु की प्रतिज्ञा कि वहां कुछ लोगों ने राज्य को देखना था (16:28)

[28]''मैं तुम से सच कहता हूं कि जो यहां खड़े हैं, उनमें से कुछ ऐसे हैं कि जब तक मनुष्य के पुत्र को उस के राज्य में आते हुए न देख लेंगे, तब तक मृत्यु का स्वाद कभी न चखेंगे।''

आयत 28. यीशु ने प्रेरितों को वचन दिया कि उनमें से **कुछ** लोग **उसके राज्य** को ''सामर्थ के साथ आया हुआ'' देखने के लिए जीवित रहेंगे (मरकुस 9:1)। यहूदा को छोड़ जिसने अपनी जान ले ली थी, पिन्तेकुस्त के दिन उनमें से सभी राज्य के आगमन के गवाह होने के लिए वहां थे (प्रेरितों 1:15-2:4)। अन्य ग्यारह ने राज्य (कलीसिया) के अस्तित्व में आने के कुछ वर्षों बाद तक **मृत्यु का स्वाद** नहीं चखा था। ''मृत्यु का स्वाद'' मृत्यु का *अनुभव* कराने के लिए एक मुहावरा है (यूहन्ना 8:52; इब्रानियों 2:9)। पवित्र शास्त्र स्पष्टता से बताता है कि राज्य अब है (1 कुरिन्थियों 15:24-28; कुलुस्सियों 1:13; इब्रानियों 12:28; प्रकाशितवाक्य 1:9)। ''उसके राज्य में आते हुए'' वाक्यांश का अर्थ निश्चित रूप से यह है कि उस ने मसीही युग के राजा और प्रभु के रूप में अपने शासन में प्रवेश करना था (प्रेरितों 2:33-36)।[17]

आयत 28 की दी गई और व्याख्याएं तर्कसंगत या सम्भव नहीं हैं। (1) तर्क दिया गया है कि यह अध्याय 17 के रूपांतर की बात है। परन्तु वह घटना केवल छह दिन बाद हुई थी (17:1)। इस प्रकार की घटना समय के इस क्रम में जिसका यहां संकेत है, मेल नहीं खा सकती। रूपांतर राज्य की स्थापना को चिह्नित नहीं करता था, बल्कि इससे यीशु की महिमा प्रगट हुई, जो उस ने राज्य के आ जाने पर फिर से पानी थी (यूहन्ना 17:5)।

(2) न ही यह आयत 70 ईस्वी में यरूशलेम की बात करती है। यरूशलेम का पतन बेशक परमेश्वर के न्याय का प्रकटावा था पर इसे मसीह के राज्य से नहीं मिलाया जा सकता। राज्य का आना यरूशलेम के गिरने से कई साल पहले हो गया था (देखें कुलुस्सियों 1:13; प्रकाशितवाक्य 1:6)।

(3) फिर यह आयत मसीह के द्वितीय आगमन से भी नहीं जोड़ी जा सकती। यीशु ने कहा कि उसे नहीं मालूम था कि यह घटना कब होनी थी (24:36; मरकुस 13:32), जबकि इस आयत में उस ने राज्य के आने की बात अपने प्रेरितों के जीवनकाल में होनी बताई। हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा के सिद्धांतों के विपरीत, यीशु अपने राज्य को स्थापित करने के लिए वापस नहीं आ रहा है। उस ने इसे अपने ऊपर उठाए जाने के बाद वाले पिन्तेकुस्त के दिन स्थापित कर दिया था।

❖❖❖❖❖ **सबक** ❖❖❖❖❖

खोया और पाया (16:24-27)

यीशु ने दीनता का महत्व समझाया (23:11; लूका 14:11; 18:14)। एक अर्थ में उस ने कहा, ''अपने दिमाग को अपने आपसे दूर कर दो, और अपने आपको अपने दिमाग से।''

वे कुछ कौन सी बातें हैं, जो हमें खोनी आवश्यक हैं।

1. *स्वार्थ।* स्वार्थी लोग अपरिपक्व हैं। यीशु ने अपना इनकार करना सिखाया?

2. *खुदगर्ज़ी।* अदन में वास्तविक समस्या यह थी कि आदम और हव्वा अपने ही ईश्वर बनना चाहते थे। घमण्ड बड़ी समस्या है।

3. *आत्मचेतनता।* संसार हमें बताता है ''अपने आपको जानो।'' कुछ लोग ''अपने साथ ईमानदार बनना'' सिखाते हैं।

इसके उलट बाइबल अपने बारे में तीन नियमों का पालन करना बताती है: अपने आपको दे देना, अपना इनकार करना और आपने आपको खो देना।

अपना प्राण खोना (16:25)

आवश्यकता पड़ने पर मसीह के काम के लिए अपनी जान दे देने को तैयार होना आवश्यक तो है परन्तु क्रूस को उठाने का अर्थ संसार में प्रभु के काम को करते हुए अपने आपको खो देना भी हो सकता है। इसका अर्थ खोए हुओं को ढूंढ़ने, उद्धार पाए हुओं को बचाए रखने और गिरे हुओं को सम्भालने में लगे होना हो सकता है। इसका अर्थ ''अनाथों और विधवाओं'' के पास जाकर और ''अपने आपको संसार से निष्कलंक'' रखते हुए ''शुद्ध और निर्मल भक्ति'' करना है

(याकूब 1:27)। ऐसे समर्पित जीवन जीने से अनन्त जीवन मिलेगा।

उद्धार पाने की इच्छा (16:26)

हमारे साथ सबसे भयंकर बात क्या हो सकती है? नौकरी छूटना? किसी प्रियजन का खोना? स्वास्थ्य का खोना? वास्तव में इनमें से कोई भी नहीं। मत्ती 16:26 में यीशु ने अपना उत्तर दिया। किसी के भी जीवन की सबसे बड़ी त्रासदी उसके अपने प्राण का खोना होगा। किसी को भी खोना नहीं चाहिए, क्योंकि परमेश्वर ने सबके उद्धार के लिए उपाय किए हैं। यदि कोई खोता है, तो दोष परमेश्वर का नहीं होगा (रोमियों 2:1)।

उद्धार पाने के लिए भौतिक सम्पत्ति, शिक्षा या प्रसिद्धि की आवश्यकता नहीं है। परमेश्वर को भाने के लिए व्यक्ति के लिए उद्धार के लिए अपनी ही आवश्यकता को ईमानदारी से मानने और परमेश्वर द्वारा दी गई आज्ञा का पालन करने की इच्छा के साथ केवल सुसमाचार की आज्ञा मानने की इच्छा होना आवश्यक है।

टिप्पणियां

[1]क्रेग एस. कीनर, *ए कमैंट्री ऑन द गास्पल ऑफ़ मैथ्यू* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1999), 421. [2]विलियम हैंड्रिक्सन, *न्यू टैस्टामैंट कमैंट्री: एक्सपोज़िशन ऑफ़ द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1973), 654. [3]मत्ती 12:40; 16:21; 17:23; 20:19; 26:61; 27:40, 63, 64; मरकुस 8:31; 9:31; 10:34; 14:58; 15:29; लूका 9:22; 13:32; 18:33; 24:7, 21, 46; यूहन्ना 2:19; प्रेरितों 10:40; 1 कुरिन्थियों 15:4. [4]*जौंडरवन इलस्ट्रेटड बाइबल बैकग्राउंड कमैंट्री,* अंक 1, *मैथ्यू, मार्क, लूक,* संपा. क्लिंटन ई. अरनोल्ड (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन, 2002), 104 में माइकल जे. विलकिन्स ''मैथ्यू।'' [5]डग्लस आर. ए. हेयर, *मैथ्यू,* इंटरप्रिटेशन (लुइसविल्ले: जॉन नॉक्स प्रैस, 1993), 194. [6]हैंड्रिक्सन, 655. [7]डब्ल्यू. एफ़. अल्ब्राइट एंड सी. एस. मन, *मैथ्यू,* द एंकर बाइबल (गार्डन सिटी, न्यू यॉर्क: डबलडे एंड कं., 1971), 200. [8]हेयर, 194. [9]जैक पी. लुईस, *ए कमैंट्री ऑन द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू,* पार्ट 2, द लिविंग वर्ड कमैंट्री (आस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1976), 41-42. [10]प्लुटार्क *मोरालिया* 554बी।

[11]आरम्भिक परम्परा में पतरस की शहादत का उल्लेख है, परन्तु उसे मृत्यु दिए जाने के ढंग को बताया नहीं गया (*1 क्लेमेंट* 5.4)। बाद के लेखों में पता चलता है कि उसे उलटा क्रूस पर लटकाया गया था (यूसबियुस *एक्लेसियेस्टिकल हिस्ट्री* 3.1; *ऐक्ट्स ऑफ़ पीटर* 37-39)। इस परम्परा के सही-सही होने पर विवाद तो है, परन्तु किसी को क्रूस पर उलटा लटकाए जाने की प्रथा को महत्व दिया जाता है (सेनेका *कंसोलेशन टू मार्सिया* 20)। [12]यह बात यहूदा को छोड़, जिसने यीशु को पकड़वाया था, सबके लिए है। [13]यहूदी लेखों में ऐसे ही विचारों के लिए, देखें *1 एनोक* 108.10; *बरूक* 51.15, 16; मिशनाह *ऐब्बथ* 4.17; टालमुड *टमिद* 32ए। [14]रॉबर्ट एच. गुंडरी, *मैथ्यू: ए कमैंट्री ऑन हिज़ लिटरेरी एंड थियोलॉजिकल आर्ट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1982), 340. [15]जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे, द *न्यू टैस्टामैंट कमैंट्री,* अंक 1, *मैथ्यू एंड मार्क* (पृष्ठ नहीं, 1875; रिप्रिंट, डिलाइट, आरकैंसा: गॉस्पल लाइट पब्लिशिंग कं., तिथि नहीं), 148. [16]लुईस *मैथ्यू,* 42. [17]मैक्गर्वे, 149.